International Journal of Applied Research 2017; 3(1): 984-985

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(1): 984-985
www.allresearchjournal.com
Received: 12-11-2016
Accepted: 22-12-2016

डॉ० मनोज कुमार
दिग्घी पोखर पश्चिम, (प्रोफेसर कॉलोनी) लालबाग, दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
डॉ० मनोज कुमार
दिग्घी पोखर पश्चिम, (प्रोफेसर कॉलोनी) लालबाग, दरभंगा, बिहार, भारत

मिथिला के राजवंश : एक ऐतिहासिक अनुशीलन

डॉ० मनोज कुमार

सारांश
जनक और जानकी के कारण मिथिला पवित्रता का पर्याय है। मिथिला का नामकरण भी रोचक है–वशिष्ठ के शाप से राजा 'निमि' की मृत्यु हो गई। परनतु पुनः 'निमि' के शरीर मंथन से 'मिथि' नामक पुत्र की उत्पत्ति हुई जिसके नाम पर 'मिथिला' राज्य की स्थापना हुई। यहीं के राजा जनक भी थे। शत्रुओं को नष्ट करने वाली नगरी के रूप में भी मिथिला की पहचान है। यहाँ कई राजवंशों का शासन रहा। इन्हीं राजवंशों और उनकी उपलब्धियों का विश्लेषण इस आलेख में किया गया है।

विषय वस्तु
यजुर्वेद संहिता में मिथिला राज्य का सर्वप्रथम वर्णन किया गया है। बाद में बौद्ध जातक, जैन, ब्राह्मण, पुराण, रामायण एवं महाभारत में विशेष रूप से चर्चा की गई है। [1] इस राज्य की लम्बाई 24 योजन या 192 मील, कौशिकी नदी से गण्डकी नदी तक एवं चौड़ाई 16 योजन या 128 मील गंगा नदी से पर्वतराज हिमालय तक था। [2] मिथिला के अन्य नाम भी इस प्रकार हैं–नेमिकानन ज्ञानपीठ, स्वर्णलांग, शाम्भवी, विकल्मषा, रामानन्दकति, विश्वभामिनी, नित्यमंगला, विदेह, तीरभुक्त या तिरहुत है। बहुश्रुत कथानुसार राजा विदेह माधव अपने पुरोहित गौतम रहुगण के साथ सरस्वती तट से चलकर सदानीरा (गंडक) को पार कर आर्यों की एक शाखा का नेतृत्व करते हुए यहाँ आए और वैश्वानर अनल की सहायता से इस पंकिल एवं वनाच्छादित प्रदेश को वास योग्य बनाया जो बाद में 'विदेघ' अथवा 'विदह' के नाम से विख्यात हुआ। [3] गुप्त के शासन काल में इसे 'तीरभुक्ति' कहा जाता था, जिसका अपभ्रंश 'तिरहुत' है। तीन बड़ी नदियों गंगा, गंडकी एवं कौशकी के तट पर अवस्थित होने के कारण इसे तीरभुक्ति कहा जाता था। मिथिला का विदेह राज्य के समय स्वतंत्र अस्तित्त्व था। लेकिन यह बाद में सदैव पराधीन होता रहा। लगभग 1400 वर्षों के बाद कर्णाट वंश के शासन काल में इसका भाग्योदय हुआ। [4]

कर्णाटवंशीय शासक नान्यदेव अथवा नान्युपदेव सूर्यवंशीय कर्णाट क्षत्रिय थे। ये मूल रूप से दक्षिण भारत के निवासी थे, जो चालुक्यों की कर्णाट शाखा में उत्पन्न हुए थे। नान्यदेव के समय में उत्तर भारत की राजनैतिक स्थिति अस्थिर एवं विषाक्त थी। उस समय बंगाल में सेन वंश, उड़ीसा में गंगा राज्य तथा कन्नौज में गढ़वाल राज्य की स्थापना हो चुकी थी। ये सभी शक्तियाँ अपने बर्चस्व स्थापित करने हेतु तत्पर थे, ऐसी परिस्थिति में नान्यदेव ने 1098 ई० में नेपाल पर विजय प्राप्तकर 1198 ई० तक नेपाल की तीनों राजधानी (पाटन, काठमांडू और भटगाँओ) पर अधिकार कर लिया। [5] स्थानीय जनश्रुतियों के अनुसार नान्यदेव चम्पारण में भी अपने नाम पर 1097 ई० में नान्यपुर अथवा नान्यपुरा या नान्होपुर नगर बसाकर शासन की सुविधा के लिए वहाँ अपनी दूसरी राजधानी बनायी थी। वहाँ के विशाल भग्नावशेष खण्डहर अभी भी विद्यमान हैं। मिथिला निवासी 'श्री धर' कायस्थ जाति के थे, जो नान्यदेव के प्रिय पात्र एवं प्रधान अमात्य एवं प्रशस्तिकार भी थे। नान्यदेव के पुत्र गंगदेव के शासनकाल में उसके मुख्यमंत्री पाल, कंचुरी एवं गढ़वाल के पारस्परिक संघर्षों के बीच अपनी दूरदर्शिता, नीति कुशलता एवं वीरता के बल पर राज्य की रक्षा करते हुए निरंतर शक्तिशाली बनाते रहे। उन्होंने संपूर्ण मिथिला पर एकछत्र राज्य स्थापित किया।

नान्यदेव के शासनकाल में कला को काफी संरक्षण मिला। क्योंकि वे स्वयं भी संगीत शास्त्र के मर्मज्ञ थे। भरत नाट्यशास्त्र के भाष्य के प्रणेता नान्यदेव ही थे। उक्त पुस्तक में गायन विद्या के सभी पहलुओं पर गंभीरता से विवेचन किया गया है। [6] इन्होंने 50 वर्षों तक मिथिला पर शासन किया। इनकी मृत्यु 1147 ई० में हुई। इनके समय मे यह राज्य सदियों बाद स्वतंत्र रूप से अपने अस्तित्व में आया। नान्यदेव के दो पुत्रों में 'पुरुष परीक्षा' के अनुसार मल्लदेव की मृत्यु मात्र 16 वर्ष की अवस्था में समर क्षेत्र में हुई। [7] दूसरा पुत्र गंगदेव 1147 ई० में अपने पैतृक सिंहासन पर बैठा, और 41 वर्षों तक मिथिला पर शासन किया। प्रचलित जनश्रुति के अनुसार बल्लालसेन एवं गंगादेव के बीच संघर्ष के संकेत मिले हैं। [8]

अपने मंत्री श्रीधर दास की सहायता से संघर्ष को शांत कर सुचारु रूप से राज्य संचालन किया। उन्होंने जनहित को ध्यान में रखते हुए राज्य में अनेक प्रशासनिक सुधार किया। राजस्व की प्राप्ति में सुविधा को ध्यान में रखते हुए राज्य को अनेक समिति तथा परगनों में विभक्त किया गया। [9] प्रत्येक परगने में राजस्व की वसूली के लिए समाहर्ता तथा मुखिया को नियुक्त किया गया जिसे चौधरी की उपाधि दी गई थी। विवादों के निपटारे हेतु ग्रामों में पंचायतों की स्थापना की गयी। [10] ग्राम पंचायतों की स्थापना तथा गाँव में ही विवादों के निपटारा होने से प्रजा की सुख समृद्धि में काफी सुविधा हुई।

धर्म की स्थापना के लिए उन्होंने एक अलग विभाग बनाया जिसके प्रधान अथवा मंत्री पं० वर्द्धमान उपाध्याय थे। उन्हें 'धर्माधिकारणिक' की उपाधि प्रदान की गयी थी। [11] उन्होंने अनेक सरोवर खुदवाए, जिनमें तीन अभी भी विद्यमान है, इन्हीं के नाम पर इसे गंगासागर कहा जाता है। [12] दूसरा विशाल सरोवर मधुबनी के अंधराठाढ़ी में खुदायी गई थी। जनुश्रुतियों के अनुसार अंधराठाढ़ी में इन्होंने विशाल दुर्ग का निर्माण किया था। उसके भग्नावशेष से ऐसे प्रस्तर खण्ड मिले हैं, जिस पर गंगदेव का नाम अंकित है। इन्होंने 1147 से 1187 या 1188 तक शासन की बागडोर संभाली। [13] गंगदेव की मृत्यु के बाद उनका पुत्र नरसिंहदेव, (जो वीर योद्धा थे) ने 38 वर्षों तक शासन की वागडोर संभाली। इनके शासनकाल में कर्णाट राजवंश के गृह कलह के कारण नेपाल के कर्णाट राजकुल के शासक ने मिथिला को नेपाल से अलग एक स्वतंत्र अस्तित्त्व में ले आया। [14] नरसिंह देव की मृत्यु 1225 ई० में हुई।

नरसिंह देव की मृत्यु के पश्चात् उनका पुत्र एवं उत्तराधिकारी रामसिंह देव 1225 से 1276 ई० तक मिथिला पर शासन किया। भुजवल भीम तथा भीम ये भी इनके पराक्रमी योद्धा थे। रामसिंह देव स्वयं विद्वान थे, जिससे वे अन्य विद्वानों का भी आदर करते थे। वे भक्त हृदय के पवित्र दार्शनिक लेखक थे, जिस कारण उन्होंने अनेक ग्रन्थों की रचना भी की तथा अन्य विद्वानों से भी करवाया। उनके समय में वेदों पर भाष्य को रचना की गयी। [15]

इन्होंने अपने प्रजा की सुख–सुविधा के लिए अपने प्रशासनिक, सामाजिक एवं धार्मिक सुधार से संबंधित कई कार्यक्रम किया। सामाजिक एवं धार्मिक नियमानुसार आचरण को दुरुस्त करने के लिए समाज में एक 'धर्माधिकारी' की नियुक्ति की गयी। [16] प्रत्येक गाँव में एक वर्तमान चौकीदार की तरह 'अधिकारी' की नियुक्ति की गयी जिसका काम थाने में दारोगा के कार्यालय तक शिकाय करना था। पारिश्रमिक के रूप में उसे थोड़ी जमीन दी जाती थी। इसी समय में ग्राम पटवारियों की भी नियुक्ति की गयी। ये पटवारी शासकीय लेखापाल का कार्य करते थे जिन्हें 10 रुपये ग्राम कोष से पारिश्रमिक के तौर पर दी जाती थी। गाँव के आय व्यय का हिसाब पटवारी ही रखते थे। [17] राम सिंह देव के काल में बौद्ध धर्मस्वामिन ने तिरहुत की यात्रा 1234 एवं 1236 में की थी। लौटती बार राजा के आग्रह पर मिथिला में भी रहे। चलते समय राजा ने मार्ग व्यय के लिए बहुत से सोना आदि देकर बिदा किया। इस तरह राम सिंह देव 51 वर्षों तक शासन कर 1276 ई० में मरे।

रामसिंह के पुत्र शक्रसिंह एवं शक्ति सिंह थे। इनमें शक्ति सिंह स्वेच्छाचारी एवं निर्दयी था। उसने अपने प्रजा के ऊपर कमी भी ध्यान नहीं दिया। [18] समान्ती विचार धारा के होने के कारण उससे सारी प्रजा तथा मंत्रीगण खुश नहीं रहते थे। चन्देश्वर ठाकुर राजा शक्ति सिंह देव प्रधानमंत्री थे। उन्होंने राजा पर नियंत्रण हेतु सात मंत्रियों के परिषद् का गठन कर उन्हें नियंत्रित किया। [19] शक्ति सिंह के द्वारा बसाया गया मधुवनी जिला का सकरी ग्राम है। इनका अन्तिम समय सुखमय नहीं रहा। मंत्रिपरिषद् के अधीन होकर इन्हें राजा पद से हाथ धोना पड़ा। इनकी मृत्यु 1296 में हुई। मृत्यु के बाद हरिसिंह देव ने गद्दी संभाला और ये कर्णाट कुल के प्रसिद्ध राजा हुए, कई अंशों में नान्यदेव से भी अधिक महान थे। मात्र 10–12 वर्ष की अवस्था में उन्होंने गद्दी संभाला और वयस्क होने तक राज्य का कार्य–भार मंत्रियों के ऊपर था। [19] अपने शासनकाल में उन्होंने कई मंदिर बनबाए।

इनके शासन के अंतिम क्षणों (1324) में मुसलमान ने मिथिला पर अधिकार करने इस राज्य में आया। उस समय राजधानी सिमराओं थी। दोनों में घोर युद्ध हुआ। इस युद्ध में अपनी राजधानी का मोह त्याग कर जान बचाने के लिए जंगल में प्रविष्ट हो गए। [20] तब मुसलमानों ने मिथिला के किला को नष्ट कर सिमराओं को तहस नहस कर दिया। इस प्रकार कर्णाट वंश का झंडा हरिसिंह देव के नेपाल भाग जाने के बाद झुक गया तथा मुस्लिम आक्रमणकारियों ने अपना आधिपत्य कायम किया।

प्रयोजन

भारतीयता के विकास में मिथिला का विशेष योगदान रहा है। यह सदा से ही दर्शन, न्याय शिक्षा और अध्यात्म है। यह बुद्ध एवं महावीर का कर्म क्षेत्र भी रहा है। यह शोध आलेख, कराने का विनम्र प्रयास करता है।

उपसंहार

अत्यधिक समृद्ध एवं गौरवशाली, सांस्कृतिक ख्याति का धनी मिथिला का प्रारंभिक इतिहास वास्तव में संपूर्ण भारत का इतिहास रहा है मिथिला ने अपने ज्ञान पुंज के आलोक को भारत की वर्तमान सीमा तक ही नहीं बल्कि मध्य एशिया से लेकर विश्व के कई देशों तक प्रसारित किया। यहाँ के राजा त्याग, तपस्या, आध्यात्म और वीरता के प्रतीक रहे हैं।

संदर्भ

1. डॉ. उपेन्द्र ठाकुर–हिस्ट्री ऑफ मिथिला. पृ०–28
2. डॉ० राम प्रकाश शर्मा–मिथिला का इतिहास–पृ०–1
3. मनुस्मृति–अध्याय–2 श्लोक 17.19.21.22
4. डॉ० उपेन्द्र ठाकुर–हिस्ट्री ऑफ मिथिला–पृ०162
5. डॉ० आर०सी०मजुमदार–एन्सिएण्ट इण्डिया–पृ०375
6. क्वार्टर्जी जनरल ऑफ द आन्ध्र हिस्टॉरिकल रिसर्च सोसायटी–1,55,56
7. डॉ० रामप्रकाश शर्मा–मिथिला का इतिहास–पृ०–241
8. म०म०पं०परमेश्वर झा–मिथिला तत्त्व विमर्श पृ०–112–13
9. दरभंगा जिला–गजेटियर पृ० –32
10. मुजफ्फरपुर जिला गजेटियर–पृ०18
11. डॉ० उपेन्द्र ठाकुर–हिस्ट्री ऑफ मिथिला–पृ०–196
12. वही–पृ०–196
13. वही–पृ०196
14. श्याम नारायण सिंह–हिस्ट्री ऑफ तिरहुत पृ० 62
15. दरभंगा जिला गजेटियर–पृ०–32
16. मुजफ्फपुर जिला गजेटियर–पृ०–18
17. वही पृ० –18
18. वही–पृ०
19. डॉ० रामप्रकाश शर्मा–उपरोक्त–पृ०–235
20. विग्रस–फेरिश्ता–हिस्ट्री ऑफ दि राइज ऑफ मुहम्मडन–पावर–भाग–1 पृ० 406–07